भाषा का स्वरूप और परिभाषाएँ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इस विधान को सामने रखकर अगर भाषा का विचार करेगें तो सबसे पहले सवाल उठता है -- भाषा किसे कहते है ? और भाषण मनुष्य के लिए आवश्यक क्यों है ?

मनुष्व अगर सामाजिक प्राणी है तो समाज में रहने के नाते उसे हमेशा विचार-विनियम तथा आदान-प्रदान करना पड़ता है। कभी- कभी हम स्फूट शब्दों में या वाक्यों द्वारा खुद के विचार अभिव्यतन करते है तो कभी-कभी केवल सिर हिलाकर काम चलाते है। करतल ध्वनि, हाथ हिलाकर संकेत करना, चुटकी बजाना, आँख घुमाना, उँगली दिखाना, आँख दबाना, खाँसना, मुँह बिचकाना, या टेढा करना, गहरी सांस लेना आदि द्वारा भी विचार विनिमय का कार्य चलाया जाता है। इस प्रकार भाषा के दो अर्थ होते है।

व्यापक अर्थ - भाषा के संबंध में इन सभी साधनों तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

स्पर्श ग्राहय :--

पहले वर्ग में वह साधन आते है जिनके स्पर्श द्वारा दूसरे ने अभिव्यक्त किए विचार हम समझ जाते हैं-- जैसे-चोरों का हाथ दबाना

नेत्र ग्राहय :--

दूसरे वर्ग में वह साधन आते है जिनके द्वारा समझने लिए केवल आँख की आवश्यकता होती है-- जैसे -हाथ हिलाकर संकेत करना, स्काउटों को झंडी दिखलाना।

श्रवण ग्राहय:-- तिसरे वर्ग में सर्वाधिक प्रचलित और महत्वपूर्ण साधन आते है जिनके द्वारा व्यक्त भाव तथा विचारों को समझने के लिए कान की आवश्यकता होती है। करतल ध्वनि, चुटकी बजाना, गट गट करना या बोलना सभी साधनों को भाषा कहा जाता है। परंतु भाषा का इतना विस्तृत अर्थ नहीं लिया जाता।

सीमित अर्थ :- उपर्युक्त सभी साधनों को भाषा मानने से उसके अर्थ में अतिव्याप्ति हो जाती है जो भाषा की दृष्टि उपयुक्त नहीं है । वस्तुतः भाषण का अपना एक सीमित अर्थ है जिससे भाषा का विस्तृत अर्थ नहीं लिया जाता ।

उपर्युक्त स्पष्टीकरण के बाद भी भाषा की परिभाषाएँ दी गई है। भिन्न भिन्न प्रकार से दी गई परिभाषाओं में एक भी परिभाषा भाषा को ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पायी है।

व्युत्पत्ति मूलक अर्थ : -- संस्कृत में 'भाषा' शब्द 'भाष' धातु से बना है। संस्कृत में 'भाष' का अर्थ है- 'बोलना', 'प्रकट करना', 'कहना' और 'भाषा' का अर्थ है 'जिसे बोला जाए'। इस परिभाषा में जितनी चाहिए उतनी व्यापकता नहीं है। अतः इसमें अव्याप्ति दोष है।

प्लेटो : -- अपने सोफिस्ट नामक ग्रंथ में प्लेटो ने भाषा और विचार में थोडासा अंतर दिखाया है। उनके विचारानुसार -- "विचार आत्मा की भूख है या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है। "
स्वीट : -- भाषा की परिभाषा देते वक्त स्वीट शब्द और ध्वनि का महत्व व्यक्त करते है। "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना भाषा है।
स्त्रुत्वा : -- "भाषा एक स्वतंत्रता पूर्वक चिन्ह है जिसकी सहायता से समाज में लोग एकत्रित रित्या कार्य करते हैं

और एक दूसरे के पास अन्योन्य क्रिया व्यक्त करते हैं"।

हिन्दी साहित्यकारों की परिभाषाएँ --

पतंजलि : -- "जो वाणी वर्णों में व्यक्त होती है उसे भाषा कहते हैं"।
बाबूराव सक्सेना : -- "जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है उसे समष्टी रूप से भाषा कहते हैं"।
डॉ. श्याम सुंदर दास : -- "विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेत के व्यवहार को भाषा कहते हैं।"
कामता प्रसाद गुरु : -- "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को, दूसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार वरिष्ठता को ग्रहण करने में सक्षम हो सकता है।